Vol. 4, No. 1 (January 2015) p. 63-67 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

''भारतीय संगीत शिक्षा का महिलाओं में प्रचलन''

पूजा मिश्रा
शोध छात्रा
संगीत एवं प्रदर्शनकला विभाग
केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद।
Email: pmis.lovely@gmail.com

शोध पत्र सारांश

संगीत एवं नारी सदैव से ही एक दूसरे के पूरक हैं। नारी की वाणी में गीत है। उसके द्वारा सम्पादित और संचालित हर कार्य में वाद्यों की ताल और लय विद्यमान है। उसकी चाल में, उसकी गति में नृत्य की थिरकन है। नारी में गायन, वादन और नृत्य, ये तीनों इस प्रकार पूरी तरह घुले मिले हैं, जिस तरह नदी के जल में लहर। अतः नारी का समूचा व्यक्तित्व ही संगीतमय है। इसी कारण प्राचीनकालीन वैदिक युग से लेकर इतिहास के मध्यकाल तथा आधुनिक काल में भी, संगीत शिक्षा में, महिलाओं का सदैव स्थान रहा। जिसके फलस्वरूप, अपाला, लोपमुद्रा, शची, घोषा, रावण की पत्नी मन्दोदरी, विराट की पुत्री उत्तरा, बौद्धकाल में कान्हा नामक स्त्री, चारूमित्रा, गुप्त काल में शर्मिष्ठा इत्यादि, मध्यकाल में राजा मानसिंह तोमर की पत्नी रानी मृगनयनी, राणा कुम्भा की सुयोग्य पुत्री रमाबाई, गंगाबाई, यमुनाबाई, नूरबाई, जोहरा, मुश्तरी, हैदरी, सदारंग की श्ष्या धन्नाबाई, पन्नाबाई, भक्त कवियों में मीराबाई इत्यादि, वर्तमान काल में अनुष्का शंकर, गिरजा देवी, सविता देवी, सिद्धेश्वरी देवी, फिल्म संगीत में आशा भोसले, लता मंगेशकर इत्यादि महिलाओं ने ख्याति अर्जित की।

मुख्य शब्द – नारी, पूर्णरूपेण, महिलाओं, शिक्षा, साम, संरक्षण।

संगीत एक ईश्वरीय वाणी है जो कि प्राचीनकाल से ही हमारे आध्यात्मिक एवं भावात्मक जीवन का एक अभिन्न अंग रही है क्योंकि मानव की प्रत्येक क्रिया ही संगीतमय है। संगीत एवं नारी सदैव से ही एक दूसरे के पूरक हैं। नारी की वाणी में गीत है। उसके द्वारा सम्पादित और संचालित हर कार्य में वाद्यों की ताल और लय विद्यमान है। उसकी चाल में, उसकी गति में नृत्य की थिरकन है। नारी में गायन, वादन और नृत्य, ये तीनों इस प्रकार पूरी तरह घुले–मिले हैं, जिस तरह नदी के जल में लहर। अतः नारी का समूचा व्यक्तित्व ही संगीतमय है। इसी कारण प्राचीन कालीन वैदिक युग से लेकर इतिहास के मध्यकाल तथा आधुनिक काल में भी संगीत शिक्षा में महिलाओं का सदैव स्थान रहा।

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शास' धातु से बना है जिसका अर्थ हैः– शिक्षा देना, निर्देश देना व आज्ञा देना। 'मनुस्मृति' में कहा गया है– 'विद्यामृतमश्नुते'। शिक्षा का अंग्रेजी अनुवाद 'Education' है। यह शब्द लैटिन भाषा से है जिसका अर्थ है– विकसित करना अथवा निकालना तथा वह विशिष्ट विधि जो शिक्षा देने के लिए प्रयुक्त की जाए वही 'शिक्षण प्रणाली' है।

विभिन्न भौतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों की शिक्षा के समान ही कला सम्बन्धी शिक्षा भी मानव विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा जहाँ हमारे भौतिक ज्ञान को परिष्कृत करती है वहीं कलाएँ हमारे व्यवहारिक ज्ञान एवं सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति में वृद्धि करती हैं। अन्य कलाओं की भाँति संगीत एक सर्वश्रेष्ठ कला है जिसका अपना एक शास्त्र है। यह मौखिक एवं प्रदर्शन प्रधान कला होते हुए भी अन्य विषयों की भाँति अध्ययन, अनुसंधान एवं अध्यापन का विषय रही है।

विभिन्न युगों में परिस्थितियों के अनुसार संगीत शिक्षा भिन्न–भिन्न रूप को प्राप्त करती रही है। वैदिक काल से मध्यकाल तक गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से संगीत की शिक्षा दी जाती रही। जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी गुरु आश्रम में रहकर, कठोर अनुशासन का पालन करते हुए गुरुमुख से संगीत शिक्षा प्राप्त करते थे।

प्राचीनकाल में भारतवर्ष में संगीत शिक्षा का प्रारम्भ वैदिक काल से रहा है। सामगान को पूर्णतः नियमानुसार निष्पन्न करने की अनिवार्यता ने ही संगीत शिक्षण की अवधारणा को जन्म दिया और संगीत शिक्षण की विभिन्न विधियाँ प्रचलित हुई।

वैदिक साहित्य में 'साम' प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित थे–

(1) पिता – पुत्र के रूप में
(2) गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में
(3) गुरूकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करना

प्राचीनकाल में शिक्षा पूर्णरूपेण गुरु पर निर्भर थी एवं क्रियात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता था। प्राचीनकाल में संगीत का प्रचलन लौकिक उत्सवों में था जिसमें स्त्रियाँ गायन व नृत्य किया करती थी। ऋग्वेद में गाती हुई स्त्रियों के साथ नारी के गान एवं नृत्य का उल्लेख प्राप्त होता है–

"समुत्वा धीमिरस्वरन्हिन्वती स प्रजामयः विप्रभाजा विवस्वतः।" तथा

"ऋषि पेशांसि वपेत नृतुरि वापोशतुर्वक्ष उस्त्रोव वर्जदम।"

प्राचीनकाल में महिलाओं के वीणा वादन का उल्लेख भी प्राप्त होता है। प्राचीनकाल में अप्सराओं में भी संगीत का प्रचलन रहा। इस काल में अपाला, लोपमुद्रा, शची, घोषा इत्यादि संगीत निपुण महिलाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

महाकाव्य काल में शिक्षण के लिए गुरू–शिष्य प्रणाली ही थी। रामायण काल में भी संगीत शिक्षा का प्रचलन था तथा उस काल में भी सभी जन संगीतानुरागी हुआ करते थे। रावण के महल में भी स्त्रियों के संगीत पटु होने का उल्लेख प्राप्त होता है–

"नूपुराणां च घोषेण कांचीनां निः स्वनने च। मृदंगतलनिर्घोषैर्घोष वृदिर्विनादितम्।"

रावण के यहाँ स्त्रियाँ सभी प्रकार के वाद्य बजाती थीं। रावण की रानियाँ भी कुशल वादक थीं। रावण की पत्नी मन्दोदरी भी स्वयं संगीतज्ञा थी। महाभारत काल में अर्जुन ने विराट की पुत्री **उत्तरा** को संगीत की शिक्षा दी थी –

"गीतं नृत्तं विचित्रं च वादित्रं विविधं तथा।
शिक्षयिपयाभ्यहं राजन् विराटस्य पुरस्त्रियः।। – महाभारत

गौतम बुद्ध की माता मायादेवी भी कला–निपुण थीं। बौद्ध जातक कथा में कान्हा नामक स्त्री को भी संगीत कुशल बताया गया है। मौर्य काल में चारूमित्रा जैसी गायिका एवं नर्तकी भी थी। गुप्त काल में शर्मिष्ठा नामक एक महान गायिका, वादिका एवं नृत्यांगना हुआ करती थी। इस काल के महाकवि कालिदास के ग्रन्थों में भी राजा अज अपनी प्रिय पत्नी इन्दुमती को संगीत एवं अन्य ललित कलाओं की शिक्षा देते थे। अग्निमित्र के राजगृह में संगीतशाला थी, जिसमें संगीत के विविध अंगों का अध्ययन तथा अध्यापन अधिकारी आचार्यों की देखरेख में होता था। ऐसे आचार्यों को उनकी योग्यता के अनुकूल वेतन

भी दिया जाता था। हर्षवर्धन के युग में उसकी बहन राजश्री भी गायिका थीं जिसने सम्राट हर्ष को संगीत शिक्षा दी थी। 6ठीं व 7वीं शताब्दी में नालन्दा विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा की व्यवस्था थी, 10वीं शताब्दी में बीजापुर जिले के सलोरगी के मन्दिर के एक कक्ष में संगीत विद्यालय की स्थापना, 11वीं शताब्दी चिगलीपुट जिले में वेंकटेश्वर के मंदिर में तथा 14वीं शताब्दी में तिरोर्वार्मिपुर व मल्कापुरक में विद्यामन्दिरों की स्थापना हुई।

भारतीय संगीत के मध्यकाल में गुरू शिष्य परम्परा ही आगे चलकर घराना पद्धति के रूप में अस्तित्व में आई जो गुरू–शिष्य परम्परा का ही एक सुव्यवस्थित एवं संगठित रूप था। भारतीय संगीत के इतिहास में वह राजपूतों का शासन काल था। इसी समय उत्तर भारत के संगीत में घराना पद्धति का जन्म हुआ। राजा मानसिंह तोमर की पत्नी रानी मृगनयनी, राणा कुम्भा की सुयोग्य पुत्री रमाबाई, मोहम्मद शाह रंगीले एवं उनके दरबारी कवि सदारंग और अदारंग की शिष्या धन्नाबाई एवं पन्नाबाई। मध्यकाल में ही हितहरिवंश राय की शिष्याओं में गंगाबाई एवं यमुनाबाई इत्यादि संगीत निपुण महिलायें हुईं। साथ ही नारी पर्दा का प्रारम्भ भी इस काल में हुआ। कहीं–कहीं उच्च घरानों–परिवारों में नारी शिक्षा हेतु घर में ही मौलवियों आदि की व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में नृत्यांगनाओं में तो केवल गणिकाओं व वारांगनाओं के नाम ही उल्लेखनीय हैं। इन्होंने संगीत कला की शिक्षा प्राप्त की व उसका प्रदर्शन किया। नूरबाई भी मुगल दरबार की सर्वश्रेष्ठ गायिका थीं। नवाब वाजिद अली शाह एवं उनके दरबार की गायिकाओं में जोहरा, मुश्तरी, हैदरी इत्यादि। मालवा के सुल्तान बाज बहादुर की पत्नी रानी रूपमती संगीत निष्णात एवं अप्रतिम गायिका थीं उन्होंनें अनेक रागों की रचना की। कहते हैं "रूपमंजरी" रागिनी उन्हीं की रचना है। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ, शाहजहाँ कालीन गुलआरा, हीराबाई, कांचनीबाई, जेबुन्निसा, चन्द्रसखी, चिन्तामणि एवं नृत्यांगना लवंगी इत्यादि। भक्त कवियों में मीराबाई, वैशाली की महान कलाकार आम्रपाली की भी संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका है। इस काल की महान शासिका चाँदबीबी भी महान संगीतज्ञा थीं।

वर्तमान काल में संगीत शिक्षा के दो मुख्य रूप प्रचलित हैं – 1. घराना पद्धति

2. संस्थागत पद्धति

जिसके अन्तर्गत अनेक महिलाओं ने संगीत शिक्षा प्राप्त की जिनमें से कुछ हैं जैसे– बलवन्त राय भट्ट एवं उनकी शिष्या सुभद्रा चौधरी, पंडित भोलानाथ भट्ट, भैया गनपत राव, श्री कृष्णरातनजंकर, आचार्य वृहस्पति, पं0 ओमकारनाथ ठाकुर एवं उनकी शिष्या विजनबाला घोषदस्तीदार, पं0 जगन्नाथ बुआ पुरोहित की शिष्या माणिक वर्मा एवं मालती पांडे, पं0 कुमार गन्धर्व की पत्नी वसुंधरा कोमकली एवं उनकी शिष्या मीरा राव, पं0 शंकरराव बोडस की पुत्री वीणासहसबुद्धे, चित्रा चक्रवर्ती एवं आशालता करल्गीकर, अंजनीबाई मालपेकर, हीराबाई बडौदकर, बलदेव जी बुआ एवं उनकी शिष्या डॉ0 सुमति मुटाटकर, गजानन बुआ जोशी एवं उनकी शिष्या कौशल्या मांजरेकर, वासुदेव बुआ एवं उनकी शिष्या सुलभा मोहिले, विनायक राव पटवर्धन एवं उनकी शिष्या कमल केलकर, कालिन्दी केलकर तथा सुनन्दा पटनायक, काशीनाथ एवं उनकी शिष्या सुशीला मराठे, पंडित गोविन्दराव राजुरकर एवं उनकी शिष्या मालिनी राजुरकर, श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, शरणरानी (सरोद वादिका), बम्बई की जरीन दारूवाला, पंडित रामनारायण एवं उनकी पुत्री अरूणा, तबला वादिका डॉ0 अबान ई. मिस्त्री, स्व0 पंडित रविशंकर एवं उनकी पुत्री अनुष्का शंकर।

इसके अतिरिक्त अनवरी बेगम जिनको संगीत की शिक्षा सुप्रसिद्ध उस्ताद 'शम्भू खाँ' से मिली। बेगम अख्तर, इनकी संगीत शिक्षा उस्ताद अहमद खान, गुलाम मोहम्मद खान, उस्ताद सखावत हुसैन खान (भातखंडे विद्यालय लखनऊ के सरोद के प्रोफेसर) इत्यादि उस्तादों के संरक्षण में हुई। काशी की प्रसिद्ध

गायिका 'टामीबाई' की भतीजी 'दुर्गेश नन्दिनी' की प्राथमिक शिक्षा 'काशीराम किन्नर' से हुई तत्पश्चात सारंगी वादक श्री मुंशीराम मिश्र जी से मिली हुई। गिरिजा देवी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पं0 सूरज प्रसाद जी से प्राप्त की उनकी मृत्यु के पश्चात् पं0 चन्द्र मिश्र के अधीन शिक्षा ग्रहण की। गिरिजा देवी की शिष्याओं में सुनन्दा शर्मा, मालिनी अवस्थी। काशी नगरी की सुप्रसिद्ध गायिका हुस्नाबाई को संगीत की सर्वप्रथम शिक्षा काशी के वरिष्ठ विद्वान श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र से मिली उनकी मृत्यु के पश्चात् सारंगीवादक 'श्री शम्भूनाथ मिश्र' से एवं 'श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र' से सीखकर 'टप्पा ठुमरी' अंग की गायिका के रूप में ख्याति अर्जित की। ठुमरी गायिका हीरा देवी ने संगीत शिक्षा अपने पति श्री कमल मिश्र से प्राप्त की। हीराबाई बड़ौदकर ने अपने भाई सुरेश बाबू माने एवं उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ से संगीत शिक्षा प्राप्त की। जद्दन बाई ने सारंगी वादक मियांजान, भूसन खाँ, सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका गौहरजान तथा ठुमरी के सुप्रसिद्ध गायक उ0 मौजुद्दीन खाँ से संगीत शिक्षा प्राप्त की। काशीबाई ने 'श्री सियाजी मिश्र' से संगीत शिक्षा ली। काशी की सुप्रसिद्ध गायिका 'राजेश्वरी बाई' की सन्तानों कमलेश्वरी एवं ताराबाई ने प्रथमतः संगीत शिक्षा 'सिया जी मिश्र' तत्पश्चात् 'श्री सरजू प्रसाद मिश्र' एवं सुप्रसिद्ध टप्पा गायक 'श्री छोटे रामदास मिश्र' एवं श्री 'हरिशंकर मिश्र' से प्राप्त की थी। कमला–राधा नामक ठुमरी गायिकाओं ने संगीत शिक्षा 'पं0 सरजू प्रसाद मिश्र' से प्राप्त की थी।

ठुमरी गायिका लक्ष्मी बाई बड़ौदकर ने संगीत शिक्षा 'हैदर खाँ' साहब से ली थी। बनारसी अंग की 'ठुमरी' की पेंचदार गायकी की कुशल गायिका 'मलका बाई' ने संगीत शिक्षा सारंगीवादक 'पं0 सरजूप्रसाद मिश्र' से एवं उनके बड़े पुत्र 'विश्वनाथ प्रसाद मिश्र' से प्राप्त की थी। बड़ी मोती बाई ने ठुमरी की शिक्षा उस्ताद मौजुद्दीन खाँ से प्राप्त की। छोटी मोती बाई ने सारंगीवादक 'श्री कसेरू मिश्र' से संगीत शिक्षा प्राप्त की। ठुमरी गायिका माणिक वर्मा ने 'सुरेश बाबू माने', 'हीराबाइ बडौदकर' ने एवं 'बाबूराव जी' से संगीत शिक्षा ली। निर्मला अरूण ने 'अता खाँ' एवं उस्ताद 'अब्दुल रहमान खाँ' से संगीत शिक्षा ली। स्व. पूर्णिमा चौधरी जी ने 'श्री ए.टी. कानन', 'श्री महादेव प्रसाद मिश्र' तथा 'श्रीमती गिरिजा देवी' से। परवीन सुल्ताना ने 'उस्ताद गुल मुहम्मद खाँ' (कराची) एवं उस्ताद 'बड़े गुलाम अली खाँ' से। प्रभा अत्रे जी ने 'विजय करंदीकर', स्व0 सुरेश बाबू माने एवं हीराबाई बडौदकर से। पन्ना, जूही, रत्ना काशी की कुशल गायिकाओं ने 'पं0 सरजू प्रसाद मिश्र' एवं उस्ताद 'आशिक खाँ' से। राजेश्वरी बाई ने सारंगीवादक 'श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र' एवं उनकी मृत्यु के उपरान्त प्रसिद्ध सारंगी वादक 'श्री सरजू प्रसाद मिश्र' से। रसूलन बाई ने काशी के शम्भू खाँ से, रोशनआरा बेगम ने उस्ताद अब्दुल करीम खाँ से, रीता गांगुली ने ठुमरी गायकी की शिक्षा सिद्धेश्वरी देवी, बेगम अख्तर एवं मणि प्रसाद, शम्भू महाराज, युनूस हुसैन खाँ से, सिद्धेश्वरी देवी ने पं0 सियाजी एवं पं0 रामदास जी से, शाहजहाँ बेगम ने काशी के सुप्रसिद्ध उस्ताद 'आशिक खाँ' से, सविता देवी ने अपनी माँ सिद्धेश्वरी देवी से, शोभा गुर्टू ने ठुमरी की खास शिक्षा तबला वादक 'धम्मन खाँ' से जिन्होंने मौजुद्दीन खाँ से ठुमरी सुनी और सीखी थी एवं खाँ साहब नत्थन खाँ से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी।

टामी बाई के काशी के किन्नर समाज के विद्वान संगीतज्ञ 'काशी राम किन्नर' से, विद्याधरी बाई ने सर्वप्रथम अपनी गायिका माँ से तत्पश्चात् सारंगीवादक श्री रामसुमेर मिश्र (सुमेर जी), उस्ताद अमीर खाँ, बसीर दरगाही मिश्र से भी संगीत शिक्षा प्राप्त की। बागीश्वरी देवी ने भी अनेक विद्वानों से संगीत की शिक्षा प्राप्त की एवं काशी के श्री 'गणेश प्रसाद मिश्र' से भी संगीत शिक्षा ली।

इसके अतिरिक्त किशोरी अमोणकर, केसरबाई केरकर, चाँद खाँ एवं उनकी शिष्याओं में डॉ0 कृष्णा विष्ट एवं भारती चक्रवर्ती, गंगूबाई हंगल, मलिकाजान, बबली बाई, जानकी बाई "छप्पन छुरी", जोहराबाई, विनोदीजान, आगरा की फरहदजान बिब्बो, चन्द्रकला, राजेश्वरी बाई, वहिदा बाई, कालीजान,

नसीबजान, सरला भिडे, मुहम्मद हुसैन खाँ एवं उनकी शिष्या ताराबाई शिरोडकर, मोधूबाई कुर्डीकर, जयश्री पाटकर, श्रुति साडोलिकर, मीता पंडित, श्रीमती वासन्ती म्हाप्सेकर एवं सीमा मिस्त्री(हारमोनियम वादिका), कर्नाटक शैली में श्रीमती एन. राजम्, एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी, गज़ल गायिकाओं में पीनाज मसानी, चित्रा सिंह, बेगम अख्तर, फिल्म जगत में आशा भोसले, लता मंगेशकर, सुमन कल्याणपुर, अनुराधा पौडवाल, कविता कृष्णमूर्ति, श्रेया घोषाल, सुनिधि चौहान। नृत्य में सितारा देवी, मृणालिनी साराभाई, रूक्मणी देवी अरूंडेल, यामिनी कृष्णमूर्ति, संयुक्ता पाणिग्रही, कमलिनी–नलिनी इत्यादि महिलाओं ने भी संगीत शिक्षा ग्रहण कर विश्व में ख्याति अर्जित की।

उपरोक्त विवरणानुसार हम अवगत होते हैं कि भारतीय संगीत के इतिहास में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय संगीत शिक्षा का प्रचलन महिलाओं में रहा है।।

संदर्भ

1. संगीत विशारद – वसंत
2. भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण – डॉ0 स्वतंत्र शर्मा
3. ठुमरी एवं महिला कलाकार – डॉ0 पूर्णिमा द्विवेदी
4. भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य– डॉ0 पूनम दत्ता
5. लखनऊ की संगीत परम्परा– सुशीला मिश्रा
6. संगीत, मार्च 2011
7. संगीत, मई 2011
8. संगीत, जून 2011
9. संगीत कला विहार सितम्बर 1992
10. उपशास्त्रीय संगीत अंक, जनवरी 2003